साहित्य अकादमी ने किया गीत-ग़ज़ल संध्या का आयोजन

नई दिल्ली, लोकसत्य। साहित्य अकादमी की ओर से राजभाषा मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'गीत-ग़ज़ल संध्या' काआयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ गीतकार बी.एल. गौड़ एवं गज़लकार कमलेश भट्ट 'कमल' एवं विज्ञान व्रत ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। कार्यक्रम का आरंभ कमलेश भट्ट 'कमल' की ग़ज़लों से हुआ। कुछ शेर पढ़ने के बाद उन्होंने अपनी चार ग़ज़ले प्रस्तुत कीं, जिनमें यह उद्गार उल्लेखनीय थे- विरोध अपना जताने का तरीका पेड़ का भी है, जहाँ से शाख काटी थी वहीं से कोपलें निकली'। लगे ही झूठ का इल्ज़ाम क्यों उस पर, सियासत क्या कभी सच बोलती भी है। सारे दावे सब के फतवे अक्सर झूठे निकले हैं, यह दुनिया जानी है जितनी उतनी ही अनजानी है।'इसके बाद विज्ञान व्रत ने अपनी ग़जले प्रस्तुत कीं। सबसे अंत में वरिष्ठ गीतकार बी.एल गौड़ ने अपने गीत प्रस्तुत किए। सस्वर प्रस्तुत किए गए इन गीतों को श्रोताओं ने बेहद पसंद किया। कुछ गीतों की महत्त्वपूर्ण पंक्तियां थीं। कार्यक्रम का संचालन संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने किया।

Delhi 28-06-2019

http://epaper.loksatya.com/

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
लोकसत्य